2019

HINDI — GENERAL

Paper : GE/CC-3

Full Marks : 65

The figures in the margin indicate full marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए : 10×3

   (क) निराला की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

   (ख) जयशंकर प्रसाद की कविताओं के आधार पर प्रमाणित कीजिए कि 'प्रसाद प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं'।

   (ग) कवि नागार्जुन की प्रगतिशील चेतना पर प्रकाश डालिए।

   (घ) अज्ञेय की काव्यगत विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।

   (ङ) यशोधरा के 'महाभिनिष्क्रमण' के आधार पर गुप्तजी के दार्शनिक विचारों पर प्रकाश डालिए।

2. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×10

   (क) 'यशोधरा' का प्रकाशन किस वर्ष हुआ और यह किस विधा की रचना है?

   (ख) 'नए जमाने की मुकरियाँ' के रचनाकार कौन हैं और उनका समय क्या है?

   (ग) जयशंकर प्रसाद किस काल के कवि हैं? उनके किसी एक काव्य-संग्रह का नाम लिखिए।

   (घ) अज्ञेय का पूरा नाम क्या है? उनके किसी एक काव्यग्रंथ का नाम लिखिए।

   (ङ) मैथिलीशरण गुप्त के किन्हीं दो काव्यग्रंथों के नाम लिखिए।

   (च) 'तार सप्तक' का प्रकाशन कब हुआ था? इसके संपादक का नाम लिखिए।

   (छ) 'परिमल' और 'लहर' के रचनाकार का नाम बताइए।

   (ज) निराला की किन्हीं दो कृतियों के नाम लिखिए।

   (झ) नागार्जुन का मूल नाम लिखते हुए यह बताइये कि वे किस धारा के कवि हैं?

   (ञ) सिद्धार्थ किस चक्र के घूमने की बात करते हैं? यहाँ पर नवनीत किसे कहा गया है?

Please Tur

3. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) "सब गुरुजन को बुरो बतावै" — मुकरी का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'संध्या सुन्दरी' कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'यह दीप अकेला' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(घ) प्रच्छन्न रोग है प्रकट भोग;
संयोग मात्र भावी वियोग!
हा लोभ-मोह में लीन लोग,
भूले हैं अपना अपरिणाम!
ओ क्षणभंगुर भव; राम राम!

(ङ) खड़ी हो गई चाँप कर कंकालों की हूक।
नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक।।
उस हिटलरी गुमान पर सभी रहे हैं थूक।
जिसमें कानी हो गई शासन की बंदूक।।